उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक: 10/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनाँक: 02–11–2023

दिनांक : 02 नवम्बर, 2023
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की पन्द्रहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की पन्द्रहवीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 02 नवम्बर, 2023 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक (ऑनलाइन); शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के पादप रोग वैज्ञानिक व व्हीट ब्रीडर तथा मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; कृषि विभाग; रेशम विभाग; मत्स्य विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक; सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह (03 से 09 नवम्बर, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (03 से 09 नवम्बर, 2023) के दौरान प्रदेश का मौसम सामान्यतया शुष्क रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं विन्ध्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस पास रहने की संभावना है। इसी क्रम में भावर तराई कृषि जलवायु अंचल का औसत अधिकतम तापमान 27–30 डिग्री सेल्सियस; विन्ध्य, पश्चिमी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

वहीं इस सप्ताह के प्रदेश के ज्यादातर स्थानों पर औसत न्यूनतम तापमान सामान्य अथवा सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। इस दौरान भावर तराई कृषि जलवायु अंचल में औसत न्यूनतम तापमान 13–15 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र में औसत न्यूनतम तापमान 14–16 डिग्री सेल्सियस; मध्य मैदानी क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड कृषि जलवायु अंचलों में औसत न्यूनतम तापमान 15–18 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 16–18 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (10 नवम्बर से 16 नवम्बर, 2023) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (10 नवम्बर से 16 नवम्बर, 2023) के दौरान प्रदेश का मौसम मुख्यतया शुष्क बना रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं विन्ध्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस पास रहने की संभावना है। इसी क्रम में भावर तराई कृषि जलवायु अंचल का औसत अधिकतम तापमान 26–29 डिग्री सेल्सियस; विन्ध्य, पश्चिमी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान 28–30 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत अधिकतम तापमान 30–32 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

वहीं इस सप्ताह के प्रदेश के विन्ध्य कृषि जलवायु अंचल में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य से कम रहने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य अथवा सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। पूर्वी मैदानी क्षेत्र तथा उत्तर पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु अंचल में औसत न्यूनतम तापमान 16–18 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 14–16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- गेहूँ की बुवाई हेतु उपलब्ध यंत्रों हैपी सीडर, व सीड ड्रिल से लाइन में बुवाई करें।
- रबी फसलों की बुवाई के लिये चयनित किस्म का स्वस्थ, शुद्ध एवं प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें। यदि प्रमाणित बीज उपलब्ध न हो तो बीज शोधन के बाद ही बुवाई करें।
- गेहूँ की समय से बुवाई, आलू व गन्ने की बुवाई के लिये मौसम अनुकूल है अतः युद्धस्तर पर बुवाई करें।
- खरीफ फसलों की कटाई के बाद फसल अवशेष कदापि न जलायें। इनको लगभग 20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ यूरिया की दर से मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई/पलेवा के समय मिला देने से फसल अवशेष लगभग 20 से 30 दिन के भीतर जमीन में सड़ जाते हैं। कृषि विभाग के बीज व कृषि रक्षा केन्द्रों से डीकम्पोजर प्राप्त कर फसल अवशेषों को खेत में सड़ाया जा सकता है।
- शरदकालीन गन्ना के साथ अन्तःफसल के रूप में आलू, लहसुन, सब्जी मटर, मसूर आदि की अन्तःफसली खेती अवश्य करें। अन्तःफसल की फसल ज्यादा वानस्पतिक फैलाव वाली नहीं होनी चाहिये।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की असिंचित/सीमित सिंचाई की दशा में समय से बुवाई हेतु संस्तुत उन्नतशील किस्मों जैसे– के.–1317, के.–1616, डी.वी.डब्लू.–252, एच.आई.–1612, एच.डी.–3171, के–8027, के. 9351, एच.डी.–2888, के–8027 (मगहर) आदि की बुवाई 10 नवम्बर तक अवश्य कर दें।
- गेहूँ की सिंचित दशा में समय से बुवाई हेतु संस्तुत उन्नतिशील व अधिक उपज वाली प्रजातियों जैसे– पी.वी. डब्लू.–826, एच.डी.–3249, डी.बी.डब्लू.–187, एच.डी.–2967, के.–1006, डी.बी.डब्लू.–303, करण नरेन्द्र (डी.बी.डब्लू.–222), पूसा यशस्वी (एच.डी.–3226) एवं पी.वी.डब्लू.–723 आदि की बुवाई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में करें।
- उर्वरकीय क्षमता बढ़ाने के लिये दोमट या मटियार, कावर तथा मार भूमि में नत्रजन की आधी, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कूड़ों में बीज के 2–3 से.मी. नीचे डालना चाहिये। बलुई दोमट, राकड़ व पडवा बलुई भूमि में नत्रजन की एक तिहाई मात्रा, फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा को बुवाई के समय कूड़ों में बीज के नीचे देना चाहिये।
- ऊसरीली भूमि में अधिक उपज देने वाली उन्नतिशील प्रजातियों जैसे– के.आर.एल.–19, के.आर.एल.–210, के.आर.एल.–283, एन.यू.डब्लू.–669, डब्लू.–1142, के.आर.एल.–213 एवं के.8434 (प्रसाद) आदि की बुवाई करें।
- असिंचित दशा में कठिया (ड्यूरम) गेहूँ की संस्तुत किस्मों जैसे– अरनेज 9–30–1, मेघदूत, विजया यलो जे.यू. –12, जी.डब्लू–2, एच.डी.–4672, सुजाता तथा एच.आई.–8627 की बुआई करें।
- गेहूँ की बुआई लाईनों में 20 से.मी. की दूरी पर 4–6 सेमी. की गहराई पर पर्याप्त नमी रहते करें।
- असिंचित दशा में संस्तुत नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय दे।
- यदि बीज शोधित न हो तो अनावृत कण्डुआ एवं करनाल बन्ट के नियंत्रण हेतु थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस.की 2.5 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 ग्राम अथवा कार्बाक्सिन 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 ग्राम अथवा टेबूकोनाजोल 2 प्रतिशत डी.एस. की 1.0 ग्राम प्रति किग्रा. अथवा 5 ग्रा. ट्राइकोडर्मा बिरडी/हार्जेनियम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीज शोधन कर बुआई करना चाहिए।
- भूमि जनित एवं बीज जनित रोगों के नियन्त्रण हेतु बायोपेस्टीसाइड (जैव कवकनाशी) ट्राईकाडर्मा विरडी 1 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 20–25 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई से पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से अनावृत्त कण्डुआ, करनाल बन्ट आदि रोगों के प्रबन्ध में सहायता मिलती है। इस समय भूमि में नमी का भी ध्यान रखें।

- यदि अपना बीज प्रयोग कर रहे हो तो गेहूँ की बुवाई से पहले जमाव प्रतिशत अवश्य देख लें। यदि बीज अंकुरण क्षमता 85 प्रतिशत से कम हो तो उसी के अनुसार बीज की दर बढ़ा लें तथा यदि बीज प्रमाणित न हो तो उसका शोधन अवश्य करें, साथ ही बीजों को एजेटोबैक्टर व पी.एस.बी. से उपचारित कर बुवाई करें।

धान की खेती

- धान की बालियों का सुनहरा रंग प्राप्त होने की अवस्था में कटाई करें अन्यथा दाना बिखरने से उत्पादकता में कमी आ सकती है। कटाई के बाद धान को सुरक्षित व सूखे स्थान पर रखें।
- जिन कृषकों ने बीज के लिये धान की फसल ली है उन्हें सलाह दी जाती है कि वह धान की देर से पकने वाली किस्मों में खेत से अवांछित पौधों को हटा (रोगिंग) दें।
- कटाई से पहले धान में कण्डुआ रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर खेत से निकाल दें।

तिलहनी फसलों की खेती

- विलम्ब से बुवाई करने के लिये सरसों की वरदान, राधिका व आशीवाद प्रजातियों का चयन करें।
- बुवाई से 15 से 20 दिन अंदर घने पौधों को निकालकर (थिनिंग) उनकी आपसी दूरी 15 से.मी. कर देना आवश्यक है।
- राई सरसों में आरा मक्खी का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु मैलाथियान 5 प्रतिशत डी.पी. की 20 से 25 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हे. का बुरकाव अथवा मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी. की 1.50 लीटर अथवा क्यूनॉलफास 25 प्रतिशत ई.सी. की 1.25 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 600 से 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- अलसी की बीज उद्देशीय उन्नतिशील किस्मों यथा रजनी, यूटेरा अलसी, जे.एल.एस.–95, मऊ आजाद, शारदा, शेखर, पद्मिनी, उमा, इंदू, उत्तेरा अलसी–2, राजन तथा कोटा अलसी–6 तथा द्विउद्देशीय किस्मों यथा रूचि, पार्वती तथा रश्मि की बुवाई करें।

दलहनी फसलों की खेती

- दलहनी फसलों के बीज शोधित एवं उपचारित न होने की स्थिति में राइजोबियम कल्चर तथा पी.एस.बी. से उपचारित करने के बाद ही बुवाई करें। 100 कि.ग्रा. डी.ए.पी. के साथ 20 कि.ग्रा. गंधक प्रति हे. की दर से बुवाई के समय प्रयोग करें।
- चना की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु देशी संस्तुत किस्मों यथा अवरोधी, पूसा–256, के.डब्लू.आर.–108, डी.सी.पी. 92–3, के.डी.जी.–1168, आई.पी.सी.–2004–98, पूर्वी उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति गुजरात चना–4, मैदानी क्षेत्रों हेतु जाकी–9218, सी.एस.जे.–515, जी.एन.जी.–2144, जी.एन.जी.–2171, पंत ग्राम–5, वी.जी.–3043, आई.पी.सी.–2004–1, पश्चिमी उ.प्र. हेतु आधार (आर.एस.जी.–963), डब्लू.सी.जी.–1 तथा बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत किस्मों राधे व जे.जी.–16 तथा काबुली चना की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति एच.के–94–134, फूल विक्रम (जी–08108) पूर्वी उ.प्र. हेतु पूसा–1003, पश्चिम उ.प्र. हेतु चमत्कार (वी.जी.–1053) तथा बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत जे.जी.के.–1, उज्जवल व शुभ्रा किस्मों की बुवाई करें।
- मटर की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत किस्मों मालवीय मटर–15, आई.पी.एफ.डी. 6–3, आई.पी.एफ.डी. 9–2 आई.पी.एफ.डी. 12–8, आई.पी.एफ. 4–9, आई.पी.एफ.डी. 13–2, एच.एफ.पी.–1428, पूर्वी उत्तर प्रदेश हेतु पूसा प्रभात, पश्चिमी उ.प्र. हेतु जय, हरियाल, पंत पी–42, अमन, पंत पी.–250, मध्य क्षेत्र हेतु आई.पी.एफ.डी. 10–12, पंत पी–243, उ.पू. मैदानी क्षेत्र के लिये दंतीवाडा फील्ड पी–1, एच.एफ.पी.–529 तथा बुंदेलखण्ड क्षेत्र हेतु आदर्श, प्रकाश, आई.पी.एफ.डी. 11–5, आई.पी.एफ.डी. 12–2 तथा आई.पी.एफ.डी.–2014–2 किस्मों की बुवाई करें।
- निचले क्षेत्रों में उतेरा पद्धति अनुसार धान की कटाई के 15 दिन पहले मसूर की बुवाई करें।
- मसूर की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत किस्मों यथा नरेन्द्र मसूर–1, डी.पी.एल.–62, पूसा एल. 4723, पंत मसूर–5, शेखर–3, शेखर–2, शेखर–4, एच.यू.एल.–57, के.एल.बी. 208–4, के.एल.एस. 9–3, के.एल.बी.–345 की बुवाई शीघ्र करें।
- रबी राजमा की पूर्वी क्षेत्र हेतु संस्तुत उन्नतिशील किस्मों यथा पी.डी.आर.–14, मालवीय–137, उत्कर्ष, अम्बर व अरूण की बुवाई करें।
- दलहनी फसलों के बुवाई के 48 घंटे के अंदर पेंडीमेथिलीन की 1.5 लीटर मात्रा (सक्रिय तत्व) 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

- अरहर की शीघ्र पकने वाली किस्मों में फूल बनते समय कीटों का प्रकोप होने पर बी.टी. 5 प्रतिशत डब्लू.पी. 1.5 कि.ग्रा. अथवा इन्डाक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 400 मि.ली. अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.50 ली. अथवा फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मि.ली. प्रति हे. की दर से 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

जौ की खेती

- सिंचित दशा में जौ की छिलका युक्त उन्नतिशील किस्मों यथा प्रखर (के–1055), ज्योति (के–572/10), नेरन्द्र जौ–2 (एन.डी.बी.–940), एन.डी.बी.–1173 एवं जागृति (के.–287) से बुवाई करें।
- असिंचित दशा में जौ की छिलका युक्त उन्नतिशील किस्मों यथा आजाद (के–125), के–141, हरितमा (के. –560), लखन (के–226), के–603, एन.डी.बी.–1173 तथा छिलका रहित प्रजाति गीतांजली (के–1149) की बुवाई करें।
- ऊसर भूमि में जौ की उन्नतिशील किस्मों यथा के.बी.–1425 (आजाद जौ–33) एवं नरेन्द्र जौ 1445 (एन.डी. बी.–1445) आदि के बीज की व्यवस्था कर समय से बुवाई करें।

मक्का की खेती

- रबी मक्का की संकर किस्मों यथा पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीडटेक–2324, शक्तिमान–1, बुलन्द तथा संकुल मक्का की किस्मों शरदमणी, शक्ति–1, शियाट्स मक्का–3 लावा हेतु पर्ल–पॉपकॉर्न, अम्बर–पापकार्न, वी.एल. अम्बर–पापकार्न, मीठी मक्का की प्रिया स्वीट कॉर्न व माधुरी स्वीट कॉर्न तथा बेबी कार्न हेतु एच.एम.–4 आजाद कमल (संकुल) व प्रकाश किस्मों की बुआई करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ना बुवाई हेतु प्रदेश में स्वीकृत गन्ना किस्मों यथा को.शा.–13235, को.लख.–14201 को. 15023, को.शा.–17231, को.शा.–16233, को.से.–13452 तथा सी.ओ. 0118 की बुवाई करें।
- सिंगल बड द्वारा तैयार गन्ने की नर्सरी की पौध की रोपाई खेत खाली होने पर तुरंत करें, लाइन से लाईन की दूरी 4 फुट तथा पौधे से पौधे की दूरी 1 फुट रखें।
- बुवाई के समय मृदा उपचार ट्राइकोडर्मा 10 किग्रा प्रति हेक्टेयर से अवश्य करें। लाल सड़न रोग से प्रभावित खेत में गन्ने की बुवाई न करें तथा पेड़ी भी न लें।
- बीज गन्ने का उपचार बावस्टिन 0.1 प्रतिशत अथवा थायोफिनेट मिथाईल 0.1 (1 ग्राम प्रति ली. पानी) प्रतिशत से अवश्य करें।

सब्जियों की खेती

- रबी सब्जियों यथा फूलगोभी, पातगोभी, शिमला मिर्च, टमाटर, संकर टमाटर आदि की तैयार पौध की रोपाई करें तथा पूर्व में रोपित पौध में निराई–गुड़ाई, मिट्टी चढ़ाना, टॉप ड्रेसिंग एवं आवश्यकतानुसार सिचाई करें व कीट व्याधियों का नियंत्रण करें। पालक, मूली, शलजम, चुकंदर, गाजर की संस्तुत प्रजातियों की बुवाई करें।
- मटर की पछेती किस्मों यथा आजाद मटर–1, आजाद मटर–2, जवाहर मटर–83, पी. 3, काशी शक्ति आदि की बुवाई करें।
- लहसुन की उन्नतशील किस्मों यथा एग्रीफाउन्ड व्हाईट, यमुना सफेद (जी–1), यमुना सफेद–2 (जी–50), यमुना सफेद–3 (जी–282), पंत लोहित एवं एग्रीफाउन्ड पार्वती की बुवाई करें।
- प्याज की संस्तुत प्रजातियों यथा कल्याणपुर लाल गोल, पूसा रत्नाकर, एग्रीफाउन्ड लाइट रेड, एग्रीफाउन्ड व्हाईट तथा संकर प्रजातियों यथा एक्स कैलीवर, बरगण्डी, केपी, ओरियंट, रोजी की नर्सरी डालने हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- मसाले वाली फसलें जैसे–धनिया, सौंफ, मेथी, कलौंजी, अजवाइन, जीरा तथा सोया की बुवाई करें।
- पालक, मूली, शलजम, चुकंदर, गाजर की संस्तुत प्रजातियों की बुवाई करें।
- आलू की पछेती फसल हेतु संस्तुत किस्मों कुफरी समलज, कुफरी बादशाह व कुफरी आनंद की बुवाई करें।
- आलू की अगेती फसल को सफेद मक्खी, लीफ हॉपर तथा कटुकी कीट से बचाने हेतु मोनोक्रोटोफास 40 ई. सी. की 1.2 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

फलों की खेती

- आम के बाग में प्रथम 10 वर्षों तक अधिक लाभ के लिये अन्तः फसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, मटर तथा ग्लेडियोलस की खेती करें।

पशुपालन

- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- जहां खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का प्रकोप है वहां टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।
- बकरी पालन, भेड़ पालन, सूकर पालन एवं कुक्कुट पालन की तकनीकी जानकारी तथा इन सभी विषयों पर चल रही विभागीय योजनाओं के बारे मे सभी कृषक/पशुपालक अपने निकटतम मुख्य पशुचिकित्साधिकारी/ पशुचिकित्साधिकारी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं. –1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- वर्तमान समय शीत ऋतु के प्रारंभ का है अतः ऐसे समय में तालाबों में अल्सरेटिव डिजीज सिड्रोम की बीमारी परिलक्षित होती है अतः कृषकों को सलाह दी जाती है कि अपने–अपने तालाबों में 2 कु. प्रति हे. की दर से बुझे हुये चूने का प्रयोग करें।
- तालाब में संचित मत्स्य बीज के पोषण हेतु रासायनिक उर्वरकों (यूरिया 25 कि.ग्रा. एवं सुपरफास्फेट 45 कि.ग्रा. तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 4 कि.ग्रा.) को द्वितीय किस्त के रूप में कुल 74 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से तालाब में प्रयोग किया जाय।
- मत्स्य पालकों को मत्स्य बीज की वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग तालाब में मछलियों के भार का 1 से 2 प्रतिशत प्रतिदिन के अनुसार करना आवश्यक है।

रेशम पालन

- एरी पतझड़ फसल का कीट पालन प्रारंभ हो चुका है तथा शहतूती शरद फसल द्वितीय का चाकी कीटपालन माह नवम्बर के प्रथम सप्ताह में प्रारम्भ होने जा रहा है इस हेतु किसानो/कीटपालकों को सुझाव दिया जाता है कि वह कीटपालन गृह एवं कीटपालन उपकरणों का अच्छी प्रकार से 1 प्रतिशत सैनीटेक (क्लोरीन डाई आक्साइड) से या 2 प्रतिशत फार्मेलीन को घोल 3 प्रतिशत तथा 40 कि.ग्रा. चूना एवं 200 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर से तीन चक्रों में विशुद्धीकरण करायें तथा कीटपालन के समय तापमान एवं आर्द्रता विशेष ध्यान रखें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 23 नवम्बर, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

02/11/23

(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।

7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र.।
16. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
17. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
18. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
19. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
20. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
21. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
22. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
23. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
24. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
25. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
28. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
29. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
30. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
31. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
32. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
33. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
34. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
35. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
36. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
40. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
41. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
42. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
43. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
44. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
45. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

2-11-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की पन्द्रहवीं बैठक
दिनांक 02 नवम्बर, 2023 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ
3. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)
4. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
5. डा. समीर कुमार विश्वास, विभागाध्यक्ष, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
6. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. श्री अनिल सागर, उपनिदेशक (कृषि रक्षा), कृषि विभाग, लखनऊ।
8. श्री ए. के. शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
9. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
11. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
12. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
13. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, क्राप प्रोडक्शन डिवीजन, आईजीएफआरआई, झांसी। (ऑनलाइन)
14. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) (ऑनलाइन)
15. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
16. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।